भोपाल शहर के प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्य कता वाले विद्यार्थीए वं सामान्य विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन

कविता मित्रा
शिक्षा विभाग, क्राइस्ट कॉलेज, ब्यावरा (म.प्र.) भारत

सांराश
प्रस्तुत शोधपत्र में भोपाल शहर के प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमनें भोपाल शहर के 15 विद्यालयों से 80 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 40 छात्र एवं 40 छात्राओं का समूह है। आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में रेखा गुप्ता का आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि प्रत्येक विकलांग अपनी क्षमता एवं सीमा में शिक्षा ग्रहण करें जिससे उसमें आत्मग्लानि, नैराश्य, हीनभावना और अकर्मण्यता के सीन पर आत्मविश्वास, आशा और कर्मठता के साथ-साथ अपनी विकलांग स्थिति में भी जीवन जीने के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो एवं विकलांग के दृष्टिकोण में स्वावलम्बन का आकार स्पष्ट हो।

मुख्यबिन्दः– छात्र एवं छात्राएँ, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थी, आत्मविश्वास

I प्रस्तावना

भोजन वस्त्र एवं आवास की भॉति ही शिक्षा अनिवार्य आवश्यकता है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेद–भाव के ग्रहण करने का अधिकार है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को उसके क्षमता के अनुरूप अधिका–अधिक समाजोपयोगी बनाना है। यदि विकलांग वर्ग को शिक्षा के इस काम से वंचित रखा जाता है तो प्रजातंत्र के लिए यह घोर दुखद स्थिति है विकलांगता कोई अभिशाप नहीं है। यह किसी भी कारण जैसे अनुवांशिक, माता–पिता की अज्ञानता, दुर्घटनाओं अथवा कभी–कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो जाती है। विकलांगताओं के कारण कभी–कभी इनके सामाजिक एवं मानसिक आधारों में अन्तर आ जाते है। परन्तु इन्हें स्पर्धात्मक स्थितियों का आभास और लाभ का ज्ञान करवाकर सामान्य अथवा उच्च सामान्य बालकों के समक्ष किया जा सकता है क्योंकि विकलांग व्यकित की भी अपनी कुछ विशेषताएं एवं उपयोगिताएं होती है। कुछ समय पूर्व उन्हें मात्र दया का पात्र या पाप का उदाहरण समझा जाता था किन्तु जैसे–जैसे सामाजिक जागृति बढ़ती गई विकलांगों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण भी बदलता गया। आज के युग में इन्हीं विकलांग व्यक्तियों का समाज के अन्य सामान्य व्यक्तियों के समान समझा जाने लगा है। उनको शिक्षा, प्रशिक्षण एवं निर्देशन प्रदान करने के लिये विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की गई है जिससे वे अन्य सामान्य व्यक्तियों के समान अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकें।

आत्मविश्वास एक ऐसा कारक है जो कि सफल व असफल व्यक्ति में अंतर कराता है। आत्मविश्वास का स्तर निम्नतरीकों से देखा जा सकता है – जैसे – आपका व्यवहार, आपकी भाषा, आप कैसे बोलतें है आदि।

आत्मविश्वास का अर्थ है 'स्वयं पर विश्वास करने के लिए स्वतंत्र होना'। आत्म–विश्वास हमारे जीवन के प्रत्येक पहलु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। आत्मविश्वास एक दृष्टिकोण हैं जो व्यक्ति को सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे व्यक्ति अपने–आप को किसी भी परिस्थिति में ढाल सकता हैं आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी क्षमता पर विश्वास करता हैं और अपने जीवन पर नियंत्रण रखते हैं। वे जो भी इच्छा रखते हैं प्लान बनाते हैं और आशा करते हैं, उसे पूरा करने में समर्थ होते हैं। आत्म विश्वास होने का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति सब कुछ करने में समर्थ है। आत्म विश्वासी व्यक्ति की यर्थाथ आशाएं होती है कभी–कभी आशाएं पूरी न होने पर भी वह सकारात्मक दृष्टिकोण रख्ता है। जो व्यक्ति आत्मविश्वासी नहीं होते हैं वे अधिकतर दूसरों के अनुमोदन पर निर्भर रहते हैं वे असफलता के डर से खतरा नहीं उठाते । वे सामान्यतः सफलता की आशा नहीं करते परन्तु आत्मविश्वासी व्यक्ति दूसरों की अस्वीकृत होने पर भी जोखिम उठाने की इच्छा रखते है।

II पूर्व शोध कार्य

पाटीदार और दुबे (2010) ने विद्यार्थियों की उपलब्धि पर शिक्षण ब्यूह रचना ए वं आत्मविश्वास के प्रभाव का अध्ययन किया। न्यादर्श के लिए इंदौर शहर के कक्षा 9 के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थी की उपलब्धि को बढ़ाने के लिए कन्वेंशनल मेथ्ड का सार्थक प्रभाव पाया गया।

III समस्या, उद्देश्य तथा परिकल्पनाएं

(क) समस्या कथनः– भोपाल शहर के प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ख) अध्ययन के उद्देश्य

(i) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ग) अध्ययन की परिकल्पनाएँ

(i) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ii) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(iii) प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओं के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

IV न्यादर्श तथा शोध विधि

(क) अध्ययन का न्यायदर्श– प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल शहर के 15 विद्यालयों से 80 छात्रों को लिया गया। जिसमें 40 छात्र तथा 40 छात्राऍं है।

(ख) शोध विधि

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

(ग) शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर

(i) स्वतन्त्र चर – विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थी

(ii) आश्रित चर – आत्मविश्वास

(ग) शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

(i) मध्यमान

(ii) मानक विचलन

(iii) टी टेस्ट

(घ) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में रेखा गुप्ता का आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया।

V विश्लेषण

(क) परिकल्पना क्रमांक – 1

(i) विश्लेषण प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1

प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी	40	43	11.8	7.45	सार्थक अन्तर है
सामान्य विद्याथी	40	55	14.5		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सामान्य विद्यार्थी का आत्मविश्वास का मध्यमान 55, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के आत्मविश्वास का मध्यमान 43 से 13 अधिक है। सामान्य विद्यार्थी का आत्मविश्वास का मानक विचलन 14.5, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के आत्मविश्वास का मानक विचलन 11.8 से अधिक है। यह दर्शाता है कि छात्रो कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 7.45 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर होता है।

(ii) **निष्कर्ष**

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले विद्याथी एवं सामान्य विद्यार्थियो के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तरं है।

(ख) **परिकल्पना क्रमांक – 2**

(i) विश्लेषण प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 2

प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
विशेष आवश्यकता वाले छात्र	40	40	10.8	6.7	सार्थक अन्तर है
सामान्य छात्र	40	53	13.7		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सामान्य छार्त्रो का आत्मविश्वास का मध्यमान 53, विशेष आवश्यकता वाले छार्त्रा के आत्मविश्वास का मध्यमान 40 से 8 अधिक है। सामान्य छार्त्रा का आत्मविश्वास का मानक विचलन 13. 7., विशेष आवश्यकता वाले छार्त्रा के आत्मविश्वास का मानक विचलन 10.8 से अधिक है। यह दर्शाता है कि छात्रो कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 6.7 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर होता है।

(ii) **निष्कर्ष**

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्रो एवं सामान्य छात्रो के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर है।

(ग) **परिकल्पना क्रमांक – 3**

(i) विश्लेषण प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओं के आत्मविश्वास मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक : 3

प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओं के आत्मविश्वास के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
विशेष आवश्यकता वाले छात्राएँ	40	38	12.3	9.8	सार्थक अन्तर है
सामान्य छात्राएँ	40	50	16.2		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सामान्य छात्राओ का आत्मविश्वास का मध्यमान 50., विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ के आत्मविश्वास का मध्यमान 38 से 12 अधिक है। सामान्य छात्राओ का आत्मविश्वास का मानक विचलन 16.2., विशेष आवश्यकता वाले छात्राओं के आत्मविश्वास का मानक विचलन 12.3 से अधिक है। यह दर्शाता है कि छात्रो कि विचलनशीलता अधिक है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 9.8 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओ के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर होता है।

(ii) **निष्कर्ष**

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के विशेष आवश्यकता वाले छात्राओ एवं सामान्य छात्राओं के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तरं है।

VI परिणाम

विकलांगता कोई अभिशाप नहीं है। यह किसी भी कारण जैसे अनुवांशिक, माता–पिता की अज्ञानता, दुर्घटनाओं अथवा कभी–कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो जाती है। विकलांगताओं के कारण कभी–कभी इनकी सामाजिकी एवं मानसिक आधारों में अन्तर आ जाते है। परन्तु इन्हें स्पर्धात्मक स्थितियों का आभास ओर लाभ का ज्ञान करवाकर सामान्य अथवा उच्च सामान्य बालकों के समक्ष किया जा सकता है क्योंकि विकलांग व्यकित की भी अपनी कुछ विशेषताएं एवं उपयोगिताएं होती है। प्रत्येक विकलांग अपनी क्षमता एवं सीमा में शिक्षा ग्रहण करें जिससे उसमें

आत्मग्लानि, नैराश्य, हीनभावना और अकर्मण्यता के स्थान पर आत्मविश्वास, आशा और कर्मठता के साथ–साथ अपनी विकलांग स्थिति में भी जीवन जीने के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो एवं विकलांग के दृष्टिकोण में स्वावलम्बन का आकार स्पष्ट हो। विकलांग शिक्षा की आवश्यकता की दृष्टि से, प्रजातंत्र में जहॉ जनहित ही राष्ट्रहित है वहॉ समाज विकलांग को उन्ही के सार्मथ्य अनुसार शिक्षा प्रदान करें, जो जिस अवस्था में है उसकी क्षमता का अधिका–अधिक उपयोग कर एक नया जीवन दर्शन दें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] **मैकलेन जेनिफर (2005):** डिजरटेशन आब्सट्रेक्ट्स वैल्यूम 66 (ए) पी–एच.डी. एजुकेशन कोलम्ब्या विश्वविद्यालय छात्र–शिक्षा कॉलेज, पेज।

[2] अग्रवाल, संध्या (2008) **"शिक्षा मनोविज्ञान"** अनुप्रकाशन जयपुर।

[3] गैरट ई. हैनरी (1966) **"शिक्षा और मनोविज्ञान में सासंख्यिकी के प्रयोग"** कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।

[4] गुड बी.सी. (1973) **"डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन"** नेग्रा हिट बुक कै. न्यूयार्क।

[5] गुप्ता. एच.पी. (2005) **"सांख्यिकीय विधि"** शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।

[6] नरूला, संजय (2007) **"रिसर्च मैथडोलाजी "**स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

[7] पाठक पी.डी. (2005) **"शिक्षा मनोविज्ञान"** विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।